तथास्तु
GS SPECIAL
HISTORY
LECTURE - 19
KANNAUJ TRIPARTY STRUGGLE
ALL ONE DAY EXAMS 2026-27
COMPLETE GS
AVAILABLE ON
Jeet Rana Sir

कन्नौज त्रिपक्षीय संघर्ष

Kannauj Triparty Struggle

7th - 8th Century

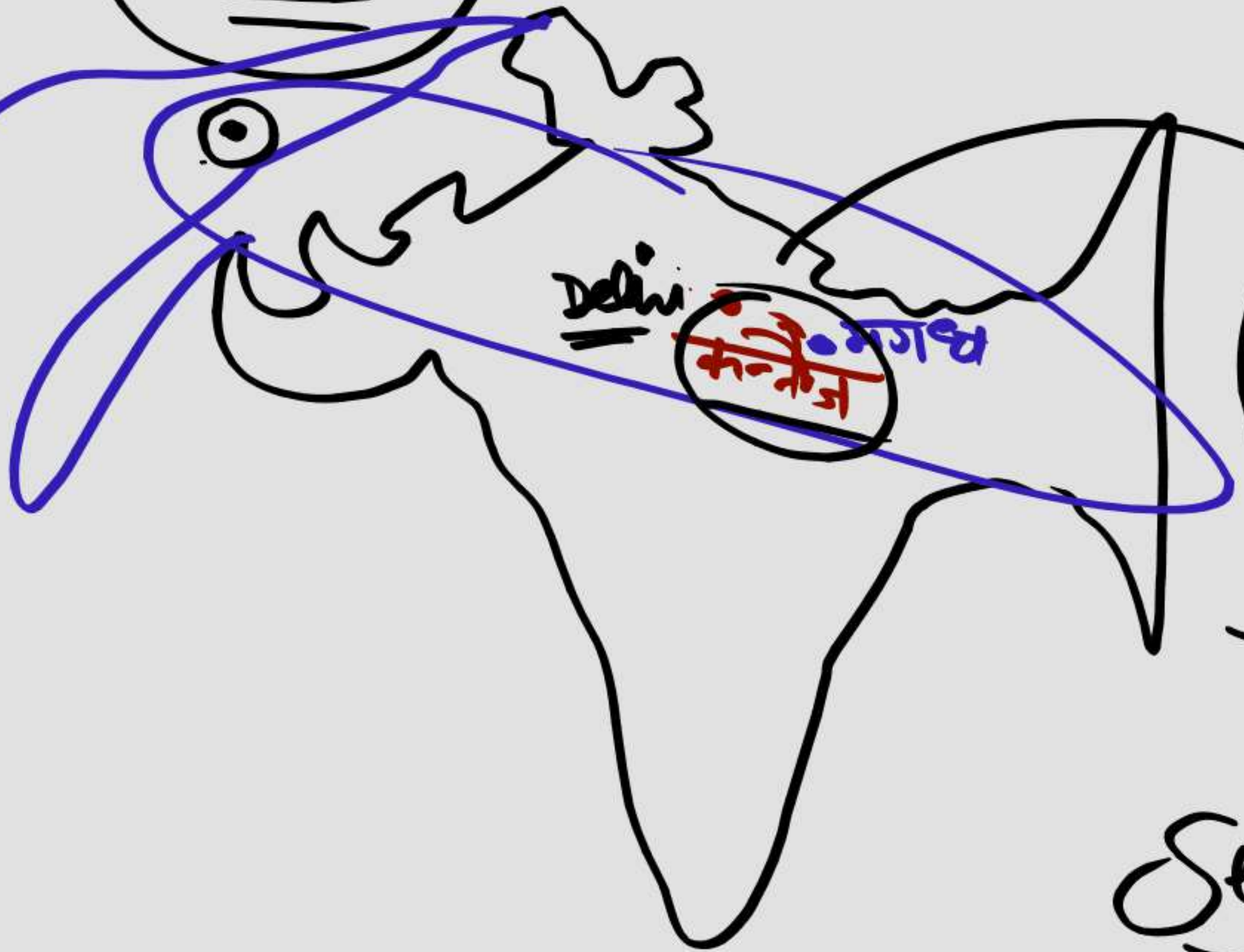

* पाल pal
* गुर्जर प्रतिहार
* राष्ट्रकूट

व्यापारिक केन्द्र → Trade Center

Se-Yu-Ki Book

Rise of the Rashtrakutas: Sovereignty and the Tripartite Struggle

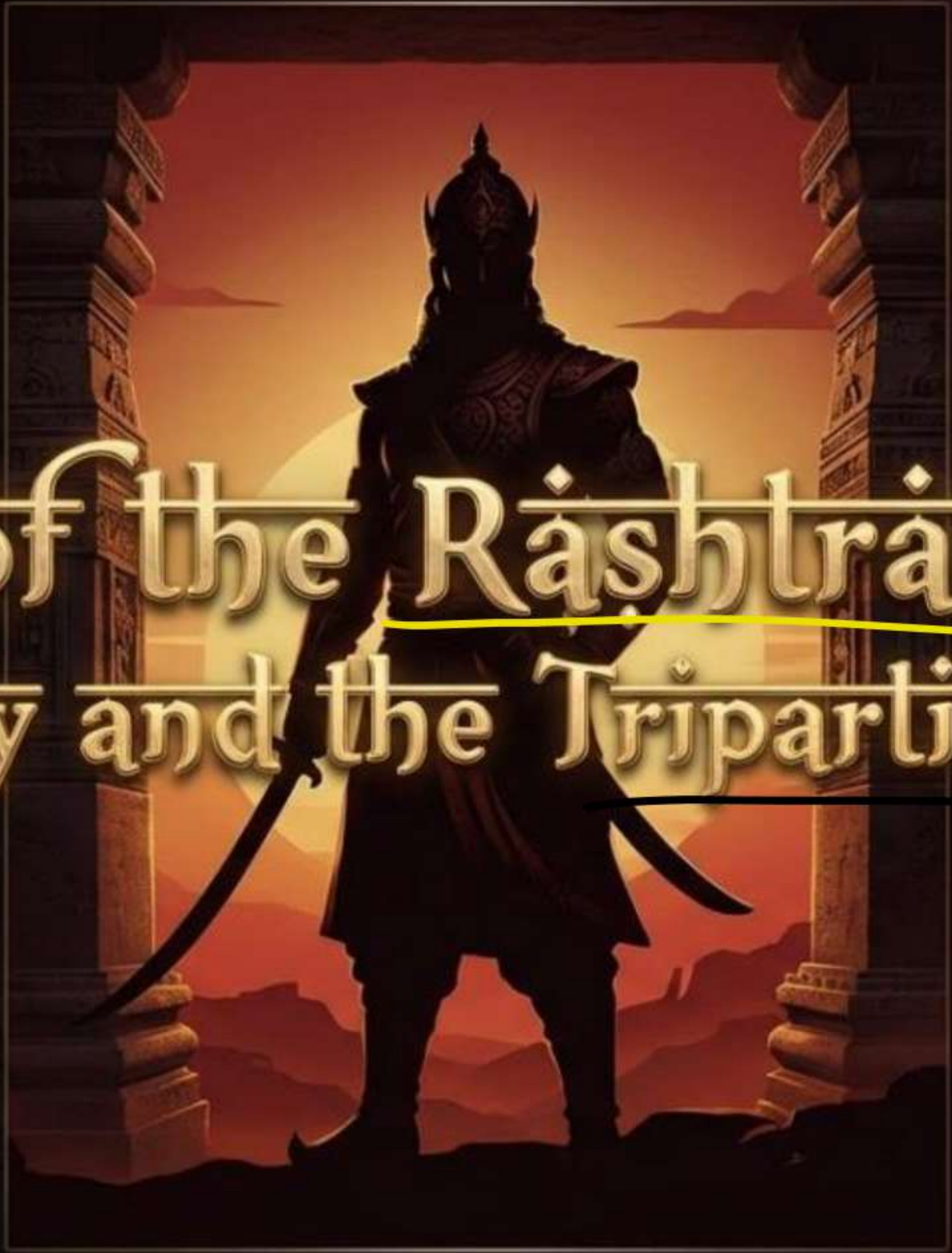

Jeet Rana GS

राष्ट्रकूटों की प्रारंभिक स्थिति और भौगोलिक विस्तार

शुरुआती दौर में राष्ट्रकूट कन्नड़ी मूल के थे और बादामी (वातापी) के चालुक्य शासकों के सामंत (Feudatories) हुआ करते थे।

इन्होंने नर्मदा नदी के नीचे के क्षेत्र से लेकर गोदावरी, कृष्णा और तुंगभद्रा नदी तक अपना साम्राज्य स्थापित किया था।

उस समय उत्तर (नर्मदा के ऊपर) में परमार शासक थे और आसपास चालुक्य (सोलंकी), कल्चुरी और सोमवंशी राजपूत शासन करते थे।

राष्ट्रकूटों ने चालुक्यों को समाप्त कर अपनी राजधानी 'मान्यखेत' (Malkhed) बनाई। मान्यखेत वर्तमान में महाराष्ट्र के उस्मानाबाद के पास 'लातूर' (Latur) क्षेत्र में स्थित है (जो आज अपने वृष्टि छाया क्षेत्र और पानी की कमी के लिए जाना जाता है)।

Jeet Rana GS

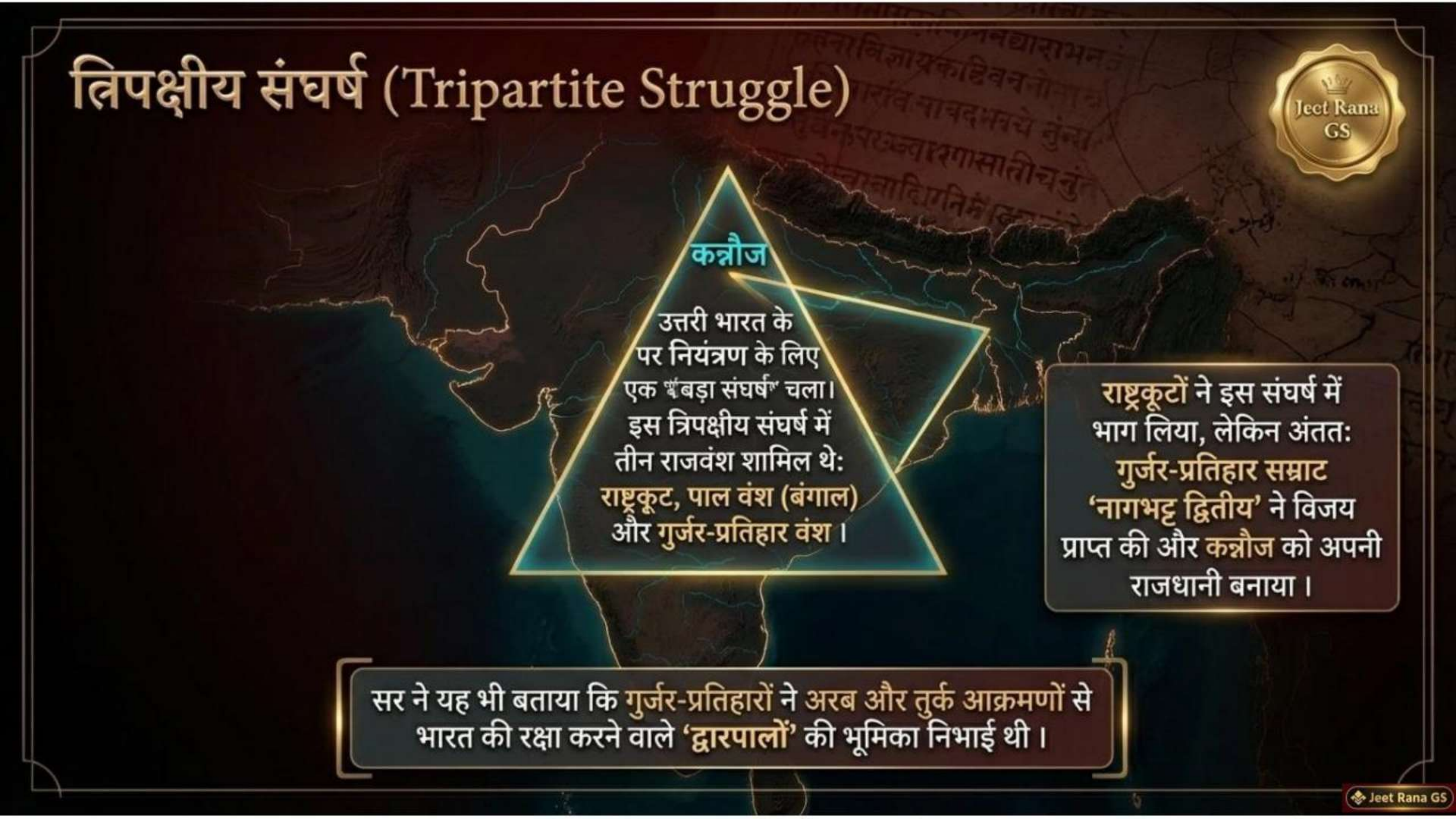
त्रिपक्षीय संघर्ष (Tripartite Struggle)
Jeet Rana GS
कन्नौज
उत्तरी भारत के
पर नियंत्रण के लिए
एक "बड़ा संघर्ष" चला।
इस त्रिपक्षीय संघर्ष में
तीन राजवंश शामिल थे:
राष्ट्रकूट, पाल वंश (बंगाल)
और गुर्जर-प्रतिहार वंश।
राष्ट्रकूटों ने इस संघर्ष में
भाग लिया, लेकिन अंततः
गुर्जर-प्रतिहार सम्राट
'नागभट्ट द्वितीय' ने विजय
प्राप्त की और कन्नौज को अपनी
राजधानी बनाया।
सर ने यह भी बताया कि गुर्जर-प्रतिहारों ने अरब और तुर्क आक्रमणों से
भारत की रक्षा करने वाले 'द्वारपालों' की भूमिका निभाई थी।
Jeet Rana GS

राष्ट्रकूट वंश की उत्पत्ति और इतिहासकारों के मत

फ्लीट (Fleet) का मत:

इन्होंने राष्ट्रकूटों को 'राठौड़ राजपूतों' की एक शाखा माना है। राठौड़ों के बारे में यह भी माना जाता है कि राव सिंहा (कन्नौज के राजा के पुत्र) से गहड़वाल और फिर राठौड़ निकले।

सी. वी. वैद्य (C. V. Vaidya) का मत:

वैद्य साहब के अनुसार राष्ट्रकूट मराठों के पूर्वज थे, जिनसे मराठी भाषा का जन्म हुआ (हालांकि अन्य इतिहासकार इसे अधिक समर्थन नहीं देते)।

अभिलेखों का प्रमाण:

राष्ट्रकूट स्वयं को अभिलेखों (लूनार डायनेस्टी) में 'चंद्रवंशी क्षत्रिय' बताते थे।

प्रोफेसर अल्टेकर (Prof. Altekar) का मत:

इन्होंने बताया कि अशोक के शिलालेखों में प्रयुक्त 'राठ' (Rath) शब्द से राष्ट्रकूटों की उत्पत्ति हुई है और इन्हें ही बाद में 'मराठियों' का पूर्वज भी कहा गया।

Jeet Rana GS

Jeet Rana GS

भाषा → कन्नड़ Kannad.

राष्ट्रकूट / Rastrakoot

पृथ्वीवल्लभ, परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर

* संस्थापक : दंतिदुर्ग Dantidurg

Capital

(मान्यखेट)
(Manyakhet)

वर्तमान : लातूर (MH)
(Latoor)

DantiDurg दंतिदुर्ग (735-56)

- कीर्तिवर्मन (II) की हत्या करके गद्दी पर बैठा। → चालुक्य (वातापी)
- 4 लाख villages पर कब्जा।
- successor (उत्तराधिकारी) → कृष्ण I st (uncle) (चाचा)

दंतीदुर्ग (735 - 756 ईस्वी): प्रथम प्रतापी शासक

Jeet Rana GS

दंतीदुर्ग (या दंती वर्मन) इस वंश का प्रथम 'प्रतापी शासक' (First Famous Ruler) माना जाता है।

इसने **गोदावरी** और **विम (भीमा)** नदी के बीच के पूरे क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था।

दंतीदुर्ग ने **कांची, कलिंग, कौशल, श्रीशैल, लाट, टंक** और **मालवा** को जीतकर पूरे **महाराष्ट्र** को अपने अधिकार में लिया।

इसने **बादामी** के चालुक्य राजा **"कीर्तिवर्मन द्वितीय"** को हराकर चालुक्य सत्ता को उखाड़ फेंका।

Jeet Rana GS

दंतीदुर्ग के ऐतिहासिक स्रोत और उपाधियां

Jeet Rana GS

दंतीदुर्ग की जानकारी मुख्य रूप से दो स्रोतों से मिलती है: 'समनगढ़ का ताम्रपत्र' और 'एलोरा का दशावतार गुहालेख'।

- प्रमुख उपाधियां: दंतीदुर्ग ने परम भट्टारक, महाराजाधिराज, पृथ्वी वल्लभ और परमेश्वर जैसी महान उपाधियां धारण की थीं।
- मालवा के शासकों (परमारों) को हराने के बाद, दंतीदुर्ग उज्जैन पहुँच गया और वहाँ उसने 'हिरण्य गर्भ महायज्ञ' का आयोजन किया था।

→ copperplate of samangard

→ Ellora Inscription

→ Hiranyagarbha Mahayagya

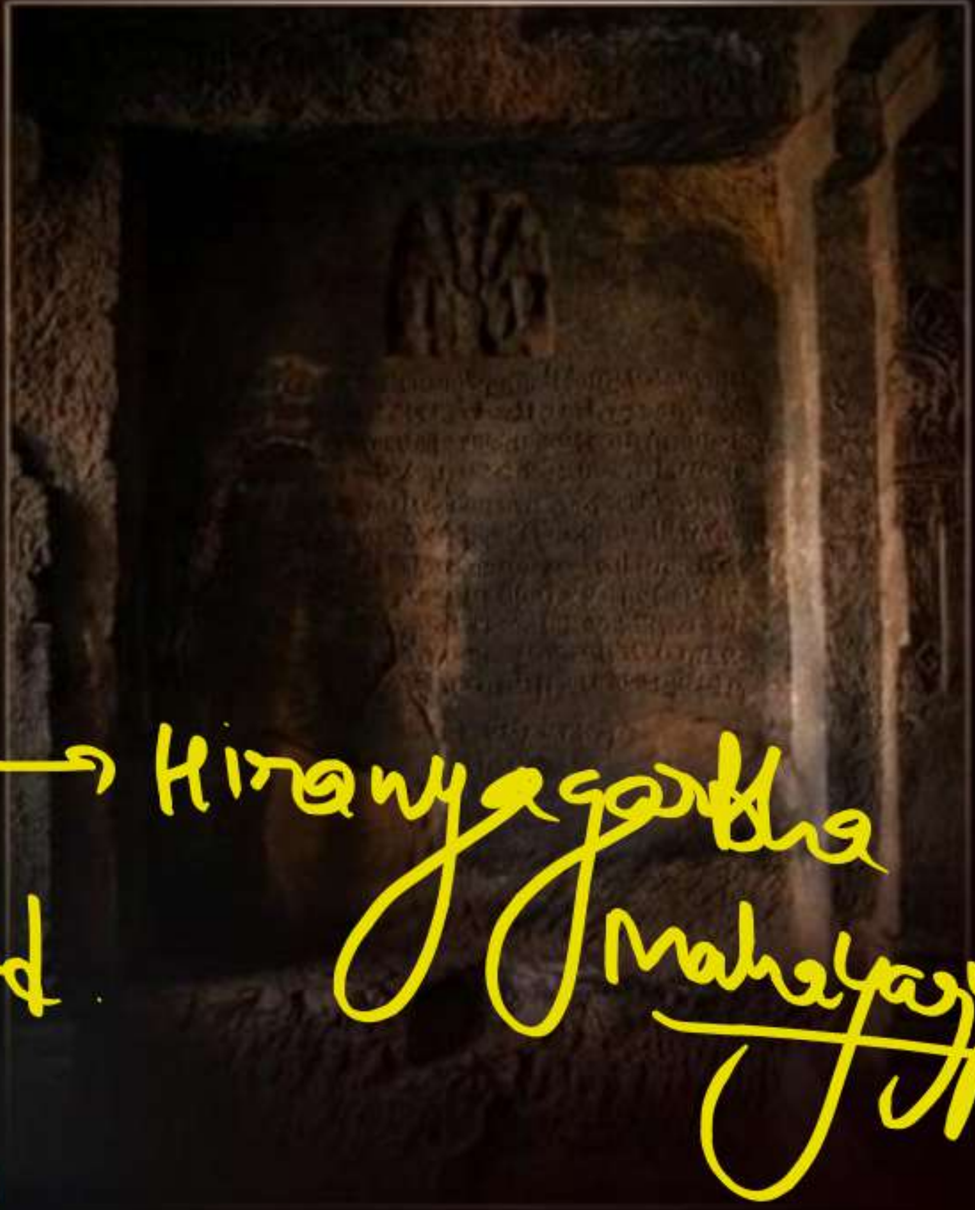

Jeet Rana GS

कृष्ण-I (756-74)

- उपाधि : शुभतुंगा + अकालवर्ष + परमेश्वर
  - Shubh Tunga
  - Akalvarsh
- भग शिलालेख → 772 AD में MP पर कब्जा।
  - ↓ मध्यप्रदेश
- Ellora की 16th cave में "कैलाशनाथ" मंदिर बनवाया।
  - ↓ Monolith (एकाश्म)

↓

गोविंद II (774-80)

- → प्रभुतवर्षा, विक्रमावलोक
- → * जानकारी कम है।
- (छोटे भाई) → ध्रुव से इनका विवाद था। → Dispute against Dhruv.
  - Dhruva
  - ध्रुव → नासिक-खानदेश अभिलेख

कृष्ण प्रथम (756 - 772 ईस्वी) और एकाश्म (Monolithic) वास्तुकला

Jeet Rana GS

दंतीदुर्ग के बाद इस वंश का अगला शासक कृष्ण प्रथम बना ।

कला और संस्कृति में कृष्ण प्रथम का सबसे बड़ा योगदान 'एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर' बनवाना था ।

यह मंदिर गुफा नंबर 16 में स्थित है और यह एक 'मोनोलिथिक' (Monolithic) मंदिर है, जिसका अर्थ है कि इसे एक ही विशाल पत्थर/चट्टान को ऊपर से नीचे की तरफ काटकर बनाया गया है ।

सैन्य दृष्टि से कृष्ण प्रथम ने बादामी के चालुक्य 'कीर्तिवर्मन' को पूर्ण रूप से पराजित किया और मैसूर के गंग वंश (पश्चिमी गंग) को भी हराया ।

Jeet Rana GS

गोविंद द्वितीय और ध्रुव का शासनकाल

Jeet Rana GS

कृष्ण प्रथम के बाद उसका पुत्र 'गोविंद द्वितीय' (773 - 780 ईस्वी) राजा बना।

गोविंद द्वितीय एक विलासी राजा बन गया था और शासन पर ध्यान नहीं देता था।

अतः, उसके छोटे भाई 'ध्रुव' ने पदच्युत करके सत्ता अपने हाथ में ले ली और 780 ईस्वी से 793 ईस्वी तक शासन किया।

ध्रुव की प्रमुख उपाधियां थीं: काली वल्लभ, श्री वल्लभ और धारावर्ष (जो कि परीक्षाओं में अक्सर पूछी जाती हैं)।

Nirupama

Jeet Rana GS

ध्रुव की सैन्य उपलब्धियां

* कन्नौज का त्रिपक्षीय संघर्ष

ध्रुव उत्तर भारत (North India) में जाकर लड़ाई करने वाला पहला राष्ट्रकूट शासक था।

उत्तर भारत अभियान के दौरान इसने गुर्जर-प्रतिहार शासक 'वत्सराज' को हराया था।

Flag पर

गंगा-यमुना चिन्ह

ध्रुव ने पल्लव शासक 'दंती वर्मा' और वेंगी के चालुक्य 'विष्णुवर्धन' को पराजित किया।

पल्लव शासक दंती वर्मा ने संधि करके ध्रुव को हाथी उपहार में भेंट किए थे।

Jeet Rana GS

Jeet Rana GS

गोविंद तृतीय (793 - 814 ईस्वी): राष्ट्रकूट शक्ति का स्वर्ण काल

Jeet Rana GS

(उपाधि) प्रभूतवर्ष, त्रिभुवनधवल

ध्रुव का तीसरा पुत्र 'गोविंद तृतीय' अपनी वीरता के कारण पिता द्वारा उत्तराधिकारी चुना गया था (जिससे यह साबित होता है कि योग्य पुत्र को ही गद्दी मिलनी चाहिए)।

* He Defeated (Nagabhatt-II) of प्रतिहार ✓

उत्तराधिकार से नाराज होकर इसके दो बड़े भाइयों ने 12 राजाओं का एक बड़ा संघ (Confederacy) बनाया, जिसे गोविंद तृतीय ने बुरी तरह हरा दिया।

इसके अलावा, जब यह हिमालय से लौट रहा था, तब दक्षिण के पल्लव, गंग और वेंगी राजाओं के एक और संघ ने इस पर हमला किया, लेकिन गोविंद तृतीय ने उन सबको भी परास्त कर दिया।

(उत्तराधिकारी) अमोघवर्ष (महाराजा सर्व, नृप तुंगा)

गोविंद तृतीय के शासनकाल को 'राष्ट्रकूट शक्ति के विकास का स्वर्ण काल' (Golden Period of Rashtrakuta Power) कहा जाता है।

Jeet Rana GS

अमोघवर्ष प्रथम (814 - 878 ईस्वी) का प्रारंभिक जीवन

अमोघवर्ष प्रथम, गोविंद तृतीय का पुत्र था, जो 10-11 वर्ष की छोटी उम्र (अवयस्क) में गद्दी पर बैठा था।

इसका मूल नाम (Original Name) 'शर्व' (Sharva) था।

इसने 64 वर्षों (814 से 878 ईस्वी) तक शासन किया, जो एक बहुत लंबा कार्यकाल था।

छोटी उम्र में होने के कारण गुजरात के प्रांतपाल (गवर्नर) 'कर्क' ने इसे संरक्षण दिया और प्रारंभिक भीषण विद्रोहों से बचाया।

Jeet Rana GS

अमोघवर्ष (878) → मृत्यु (जल समाधि)

उत्तराधिकारी (कृष्ण II) → (878-914)

→ (Indra III) इन्द्र III (914-929)

- उपाधि Tittles → Rajmarthanda (राजमरथंड।)
- नित्यवर्ष, कीर्तिनारायण
- * गुर्जर प्रतिहार के महिपाल को हराया।
- Foreign Traveller → (अलमसूदी) Almasudi
- Successor (अमोघवर्ष II) → (929-39)

← (939-67) कृष्ण III

इंद्र तृतीय (914 - 922 ईस्वी) द्वारा खोया वैभव वापस लाना

कृष्ण द्वितीय के बाद उसका पौत्र (पोता) इंद्र तृतीय शासक बना ।

इंद्र तृतीय ने राष्ट्रकूटों की संगठित शक्ति को पुनः जागृत किया ।

यह दक्षिण भारत का पहला शासक था जिसने उत्तर भारत की राजधानी 'कन्नौज' (कान्न्यकुब्ज) पर आक्रमण करके प्रतिहार शासक 'महिपाल' को हरा दिया ।

इसने वेंगी के चालुक्य नरेश 'विजयादित्य चतुर्थ' की हत्या कर दी और वेंगी पर पूर्ण अधिकार कर लिया ।

Jeet Rana GS

Jeet Rana GS

कृष्ण तृतीय (939 - 967 ईस्वी): राष्ट्रकूट वंश का महानतम शासक

कृष्ण तृतीय इस वंश का सर्वाधिक महान (Greatest) शासक माना जाता है जिसने 28 वर्षों तक शासन किया।

तक्कोलम का युद्ध (949 ईस्वी): इसमें कृष्ण तृतीय ने चोल शासक परांतक प्रथम को हराया और चोल राजकुमार 'राजादित्य' मारा गया।

प्रमुख उपाधियां: कांचीपुरम तंजय कोंड (कांची और तंजौर का विजेता), पृथ्वी वल्लभ, अकाल वर्ष, वल्लभ नरेंद्र, और कंधार पुरवराधीश्वर।

इसने उत्तर भारत में महोबा (कालिंजर) के चन्देल शासकों (जिन्होंने खजुराहो के मंदिर बनवाए थे) को भी पराजित किया।

Jeet Rana GS

Jeet Rana GS

एलोरा और एलीफेंटा की गुफाएं (कला व संस्कृति)

एलीफेंटा की गुफाएं (मुंबई)

ये गुफाएं मुख्य रूप से भगवान शिव (त्रिमुखी शिव) को समर्पित हैं और यहाँ 7 गुफाएं हैं।

→ सदाशिव मूर्ति

एलोरा की गुफाएं

यहाँ कुल 34 गुफाएं हैं जो चट्टानों को काटकर (Rock-cut) बनाई गई हैं।

गुफा 13 से 29: ब्राह्मण (शैव) धर्म को समर्पित (गुफा 16: कैलाश मंदिर)।

→ Sanatan

गुफा 30 से 34: जैन धर्म को समर्पित।

गुफा 1 से 12: बौद्ध धर्म को समर्पित (गुफा 10 विश्वकर्मा सुतार की झोपड़ी/बढ़ई की गुफा है, गुफा 11-12 तीन मंजिला मठ हैं)।

Jeet Rana GS

Jeet Rana GS

राष्ट्रकूट वंश का पतन

कृष्ण तृतीय का कोई पुत्र नहीं था, इसलिए उसके बाद उसका भाई 'खोट्टिग' शासक बना।

खोट्टिग पर मालवा के परमार शासक 'सियक द्वितीय' ने आक्रमण किया, उसे हराया और मान्यखेत को लूट लिया।

खोट्टिग के बाद उसका पुत्र 'कर्क द्वितीय' शासक बना, जो इस वंश का अंतिम राजा (Last Ruler) था।

तड़वाड़ी के सामंत 'तैलप द्वितीय' ने कर्क द्वितीय पर आक्रमण करके उसे हरा दिया और 'कल्याणी के चालुक्य' वंश की स्थापना की।

Jeet Rana GS

मृत्यु 969

Khotting

अमोघ

972 AD

Jeet Rana GS

खगोल विज्ञान, अंतरराष्ट्रीय संबंध और नौसैनिक शक्ति

खगोल विज्ञान: राष्ट्रकूटों के ग्रंथों में भारत में सबसे पहले 'पृथ्वी के गोलाकार' (Round Earth) होने की अवधारणा का उल्लेख मिलता है।

अंतरराष्ट्रीय कूटनीति: अमोघवर्ष ने बगदाद के खलीफा के दरबार में अपना एक दूतावास भेजा था।

दक्षिण पूर्व एशिया के 'श्रीविजय साम्राज्य' के साथ भी राष्ट्रकूटों के मजबूत राजनयिक संबंध थे।

अरब सागर (Arabian Sea) में राष्ट्रकूट अपने नौसैनिक अभियानों (Naval Campaigns) के लिए जाने जाते थे।

अरब यात्री अल-मसूदी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'मुरुज-उल-जहाब' (Meadows of Gold) में राष्ट्रकूट शासकों की महानता का उल्लेख किया है

Jeet Rana GS

साहित्य और वास्तुकला में अन्य योगदान

साहित्य: अमोघवर्ष प्रथम (जो एक जैन धर्म का अनुयायी था) ने कन्नड़ भाषा में 'कविराज मार्ग' (Kavirajamarga) नामक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की थी।

वास्तुकला: अमोघवर्ष के समय 'पट्टदकल' (Pattadakal) में जैन नारायण मंदिर का निर्माण हुआ जो यूनेस्को (UNESCO) विरासत स्थल है।

राष्ट्रकूटों ने हम्पी में उन्नत इंजीनियरिंग का प्रयोग करके एक बहुत ही शानदार 'पुष्करणी बावड़ी' (Stepwell) का निर्माण करवाया था।

Jeet Rana GS
Jeet Rana GS

Jeet Rana GS

Rise and Reign of the Gurjara-Pratiharas

A Comprehensive GS Lecture for Competitive Exams

Jeet Rana GS
PREMIUM COACHING INSTITUTE

Jeet Rana GS

JR
Jeet Rana GS

राजपूतों का उदय और ‘राजपूत’ शब्द का अर्थ

कालांतर में चलकर उत्तर भारत के इन सभी राज्यों के शासक ‘राजपूत’ कहलाए ।

‘राजपूत’ शब्द संस्कृत के ‘राजपुत्र’ से आया है, जिसका अर्थ होता है ‘राजा का पुत्र’ ।

कुछ लोग इसकी व्याख्या ‘रज पुत्र’ के रूप में भी करते हैं, जिसका अर्थ होता है ‘भूमि का पुत्र’ ।

वैदिक धर्म के अनुसार ये मूलतः क्षत्रिय थे, जिनका मुख्य कार्य युद्ध करना और रक्षा करना होता था ।

Jeet Rana GS

The Royal Chronicle Museum Exhibit

Jeet Rana GS

गुर्जर प्रतिहारों की उत्पत्ति: अग्निकुल का सिद्धांत

अग्निकुल के सिद्धांत के अनुसार, ऋषि वशिष्ठ ने माउंट आबू पर्वत पर यज्ञ किया था।

उस यज्ञ की आहुति से चार देव पुरुष पैदा हुए: चौहान, प्रतिहार, परमार और चालुक्य (सोलंकी)।

इस सिद्धांत की जानकारी मुख्य रूप से चंद बरदाई (मूल नाम: पृथ्वी चंद्र भट्ट) द्वारा रचित ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो' से मिलती है।

इसके अलावा 'हम्मीर रासो', 'नवसाहसांक चरित' और चौहानों के 'सिवाना अभिलेख' में भी अग्निकुल सिद्धांत का वर्णन मिलता है।

हालांकि, बिना वैज्ञानिक तथ्य के होने के कारण इतिहासकार इस मत को खारिज करते हैं।

Jeet Rana GS

गुर्जर प्रतिहारों की 'विदेशी उत्पत्ति' के मत

कई इतिहासकार मानते हैं कि गुर्जर प्रतिहार विदेशी मूल के थे।

कर्नल जेम्स टॉड (राजस्थान के इतिहास के पिता) : इनके अनुसार ये **सीथियन (Scythians)** के वंशज थे।

विंसेंट स्मिथ : इन्होंने प्रतिहारों को **शक** और **हूणों** से उत्पन्न बताया है।

कैंबेल, जैक्सन और डी.आर. भंडारकर : इन इतिहासरारों का मानना है कि हूणों के साथ **'खजर' (Khazar)** नामक जाति भारत आई थी, प्रतिहार उसी खजर जाति से हैं।

कनिंघम : इन्होंने प्रतिहारों को **'यूची' (Yuezhi)** वंश की **कुषाण शाखा** से संबंधित बताया है।

Jeet Rana GS

गुर्जर प्रतिहारों की 'भारतीय उत्पत्ति' और सामाजिक-आर्थिक कारण

गौरीशंकर हीराचंद ओझा और सी.वी. वैद्य: इन दोनों इतिहासारारों ने भारतीय उत्पत्ति के सिद्धांत का समर्थन किया है और इन्हें प्राचीन क्षत्रिय माना है।

दशरथ शर्मा और वी.एस. पाठक: इनका मानना है कि गुर्जर प्रतिहारों का उदय तात्कालिक सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों (Socio-economic impact) के कारण हुआ।

बाह्य आक्रमणों को रोकने के लिए उस समय एक **मजबूत रक्षक** की आवश्यकता थी, जिसके कारण इस वंश ने खुद को खड़ा किया।

Jeet Rana GS

अरब आक्रमणों से भारत की रक्षा (द्वारपाल की भूमिका)

गुर्जर प्रतिहार राजवंश ने लगातार शताब्दियों तक उत्तर-पश्चिम से होने वाले अरबी और तुर्की आक्रमणों को रोका ।

इन्हें 'प्रतिहार' या 'द्वारपाल' (रक्षक) कहा गया क्योंकि इन्होंने भारत के रक्षक के रूप में 'फील्डिंग' की ।

अरब आक्रमणकारियों में गुर्जर प्रतिहारों का इतना खौफ था कि मुल्लतान में अरबों ने एक सूर्य मंदिर को केवल इसलिए नहीं तोड़ा था ताकि आक्रमण होने पर वे उस मंदिर को तोड़ने की धमकी देकर खुद को बचा सकें ।

Jeet Rana GS
Jeet Rana GS

कन्नौज के लिए 'त्रिपक्षीय संघर्ष' (Tripartite Struggle)

Jeet Rana GS

9वीं शताब्दी से लेकर 11वीं शताब्दी तक (लगभग 200 वर्षों तक) उत्तरी भारत में कन्नौज पर अधिकार के लिए एक बड़ा त्रिपक्षीय संघर्ष चला।

इस संघर्ष में तीन महान राजवंश शामिल थे: राष्ट्रकूट, गुर्जर प्रतिहार, पाल वंश।

अंततः इस लंबे 'त्रिपक्षीय संघर्ष' में गुर्जर प्रतिहार राजवंश की विजय हुई और उन्होंने कन्नौज पर अधिकार कर लिया।

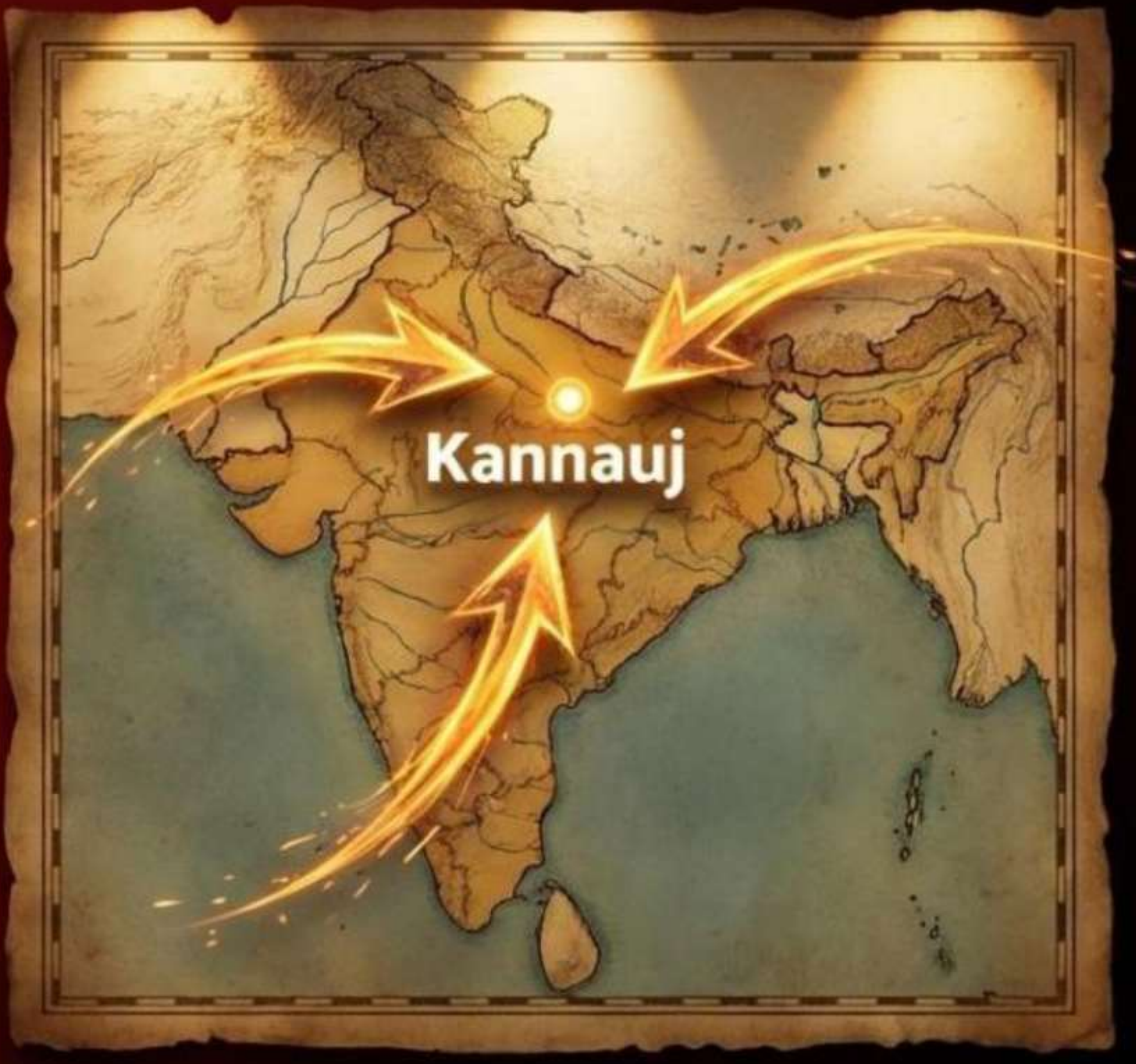

Jeet Rana GS

नागभट्ट प्रथम (730 - 756 ईस्वी): वंश के संस्थापक

Jeet Rana GS

नागभट्ट प्रथम को गुर्जर प्रतिहार वंश का प्रथम शासक और संस्थापक माना जाता है ।

इन्हें प्रतिहार, द्वारपाल और रक्षक जैसी संज्ञाएं दी गई हैं ।

नागभट्ट प्रथम ने 'जुनैद' नामक अरबी आक्रमणकारी को बुरी तरह पराजित किया था ।

नागभट्ट प्रथम के अधीन प्रतिहारों की प्रारंभिक राजधानी 'मंडोर' स्थापित की गई थी ।

इनकी सैन्य उपलब्धियों का प्रमाण 'मंदसौर के शिलालेख' में मिलता है ।

Jeet Rana GS

वत्सराज (775 - 800 ईस्वी): वास्तविक संस्थापक

वत्सराज को गुर्जर प्रतिहार वंश का 'वास्तविक संस्थापक' (Real Founder) कहा जाता है।

त्रिपक्षीय संघर्ष की वास्तविक शुरुआत इन्हीं के शासनकाल में हुई थी।

वत्सराज ने बंगाल के पाल वंश के शासक 'धर्मपाल' को पराजित किया था।

हालांकि, वत्सराज को राष्ट्रकूट राजा 'ध्रुव' के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा था।

इसके बाद कन्नौज में 'इंद्रा युद्ध' को शासक नियुक्त किया गया था।

Jeet Rana GS

नागभट्ट द्वितीय (800 - 833 ईस्वी) की महान विजय

Jeet Rana GS

नागभट्ट द्वितीय इस वंश के एक अत्यंत प्रतापी शासक थे ।

इन्होंने 816 ईस्वी के 'मुंगेर के युद्ध' में पाल वंशीय शासक धर्मपाल को फिर से हराया ।

नागभट्ट द्वितीय ने इंद्रा युद्ध के वंशज 'चक्रायुद्ध' को हराकर कन्नौज पर पूर्ण अधिकार कर लिया और उसे अपनी राजधानी बनाया ।

इन्होंने जोधपुर के पास ओसिया के प्रसिद्ध सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था ।

ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, सोमनाथ मंदिर का निर्माण/जीर्णोद्धार भी इन्हीं के समय पर हुआ था ।

Jeet Rana GS

Jeet Rana GS

नागभट्ट द्वितीय का राष्ट्रकूटों से संघर्ष और सामंत व्यवस्था

नागभट्ट द्वितीय का राष्ट्रकूट शासक 'गोविंद तृतीय' के साथ युद्ध हुआ।

इस युद्ध में गोविंद तृतीय ने नागभट्ट द्वितीय को पराजित कर दिया और मालवा पर अधिकार कर लिया।

नागभट्ट द्वितीय के अधीन कई सामंत थे, जिनमें शाकंभरी (सांभर झील) के चौहान सबसे प्रमुख थे।

सामंत का अर्थ होता है एक बड़े महाराजा को टैक्स देने वाला छोटी रियासत का राजा।

Jeet Rana GS

नागभट्ट द्वितीय की 'जल समाधि' और रामभद्र का शासन

Jeet Rana GS

जैन इतिहासकार 'प्रभा चंद्र सूरी' ने अपनी पुस्तक 'प्रभावक चरित' में नागभट्ट द्वितीय के अंत का वर्णन किया है ।

इसके अनुसार, नागभट्ट द्वितीय ने गंगा नदी में जल समाधि लेकर अपने जीवन का अंत किया था ।

नागभट्ट द्वितीय के बाद 'रामभद्र' (833 - 836 ईस्वी) गद्दी पर बैठा, लेकिन वह एक अत्यंत कमजोर शासक था ।

अतः रामभद्र को हटाकर उसका प्रतापी पुत्र (मिहिर भोज) गद्दी पर आसीन हुआ ।

Jeet Rana GS

सम्राट मिहिर भोज / भोज प्रथम (836 - 885 ईस्वी)

Jeet Rana GS
Premium Coaching Institute

सम्राट मिहिर भोज प्रतिहार इस वंश के सबसे महान और प्रतापी शासक थे, जिन्होंने 49 वर्षों तक शासन किया।

इनके शासनकाल का मूल मंत्र था "वीर भोग्य वसुंधरा" (इस धरती पर राज करने का अधिकार केवल वीरों को है)।

इन्होंने राष्ट्रकूट शासक 'कृष्ण द्वितीय' से युद्ध करके मालवा क्षेत्र को पुनः छीन लिया था।

गोरखपुर के कल्चुरी और जोधपुर के गुहिल इनके मित्र थे।

Jeet Rana GS

मिहिर भोज की प्रमुख उपाधियां और शिलालेख

Jeet Rana GS
Premium Coaching Institute

मिहिर भोज के इतिहास की जानकारी मुख्य रूप से दो शिलालेखों से मिलती है: 'ग्वालियर शिलालेख' और 'दौलतपुर शिलालेख'।

ग्वालियर शिलालेख में सम्राट मिहिर भोज को 'आदि वराह' (भगवान विष्णु के अवतार) की उपाधि दी गई है।

इसी ग्वालियर शिलालेख में अरबों को अत्यंत गंदे और असभ्य बताते हुए 'म्लेच्छ' (Mlechchhas) कहा गया है।

Jeet Rana GS

मिहिर भोज की सैन्य शक्ति और अरब यात्री ‘सुलेमान’ का वर्णन

Jeet Rana GS
Premium Coaching Institute

सम्राट मिहिर भोज के समय 851 ईस्वी में अरब यात्री ‘सुलेमान’ (Sulaiman) भारत आया था ।

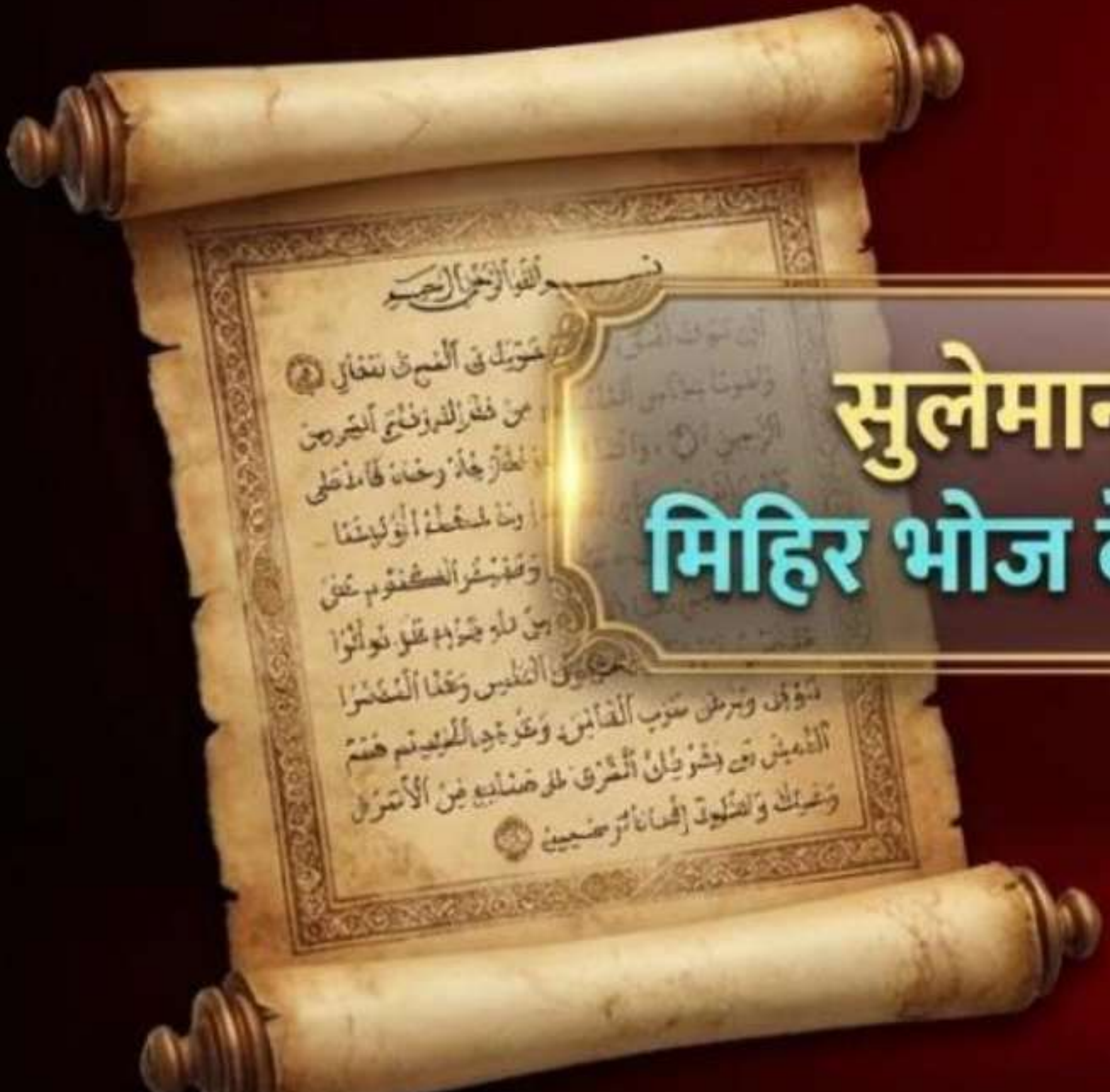

सुलेमान ने मिहिर भोज के बारे में दो बड़ी बातें लिखीं:

मिहिर भोज के पास सबसे विशाल अश्वरोही सेना (Cavalry) है ।

मिहिर भोज अरबों का सबसे बड़ा शत्रु (Biggest enemy of Arabs) है

Jeet Rana GS

मिहिर भोज के सिक्के और अर्थशास्त्र

Jeet Rana GS

मिहिर भोज ने अपने साम्राज्य में **चांदी और तांबे (Silver and Copper)** के सिक्के चलवाए थे ।

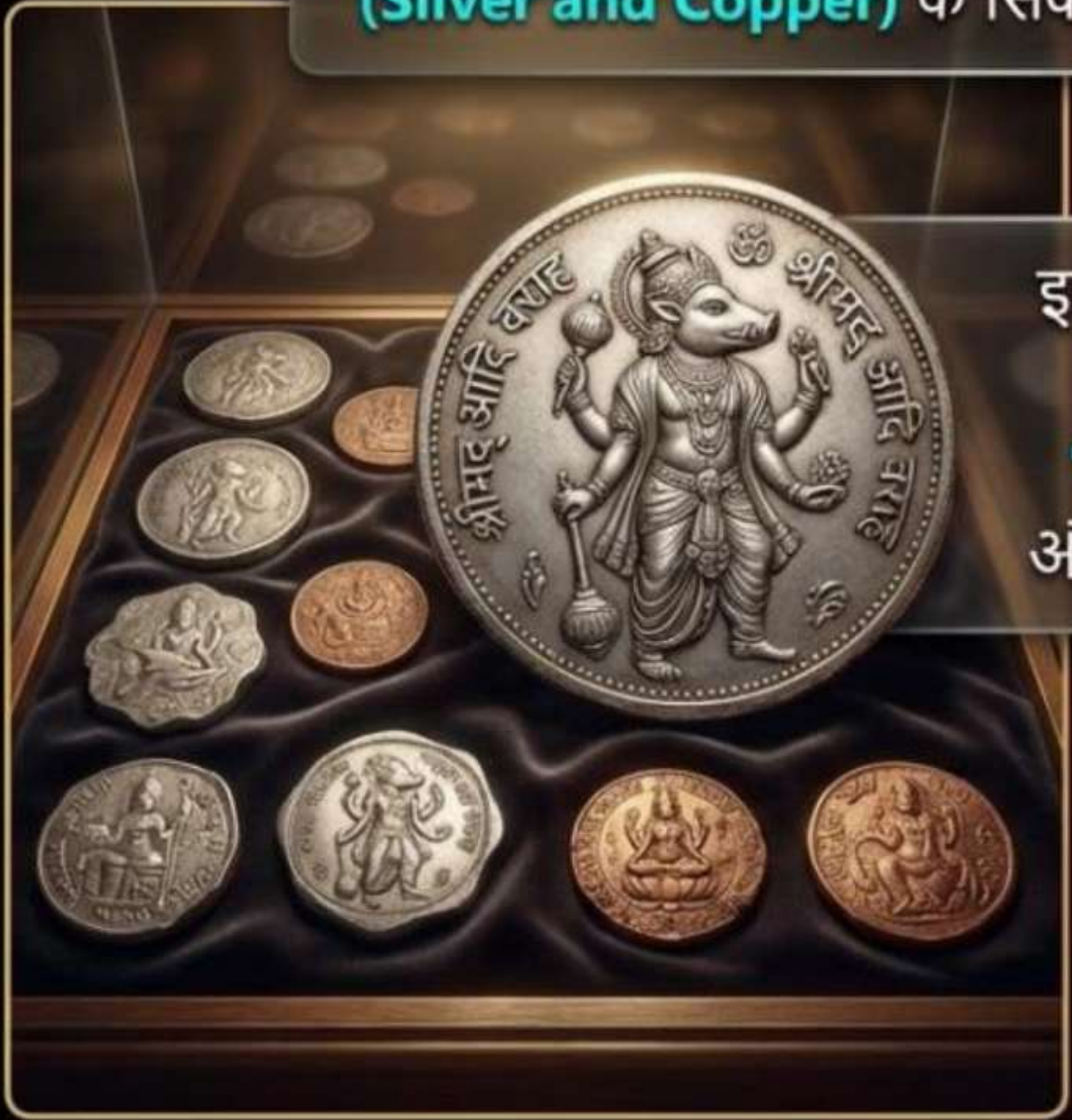

इन सिक्कों पर भगवान विष्णु के सम्मान में **'श्रीमद् आदि वराह'** अंकित हुआ करता था ।

मिहिर भोज के समय **बुंदेलखंड** के **चंदेल** और **मेवाड़** के शासक पूरी तरह से इनके **सामंत** हुआ करते थे ।

Jeet Rana GS

महेंन्द्र पाल प्रथम (885 - 910 ईस्वी) : साम्राज्य का अधिकतम विस्तार

Jeet Rana GS

स्कंद पुराण के अनुसार, मिहिर भोज तीर्थ यात्रा पर निकल गए और उन्होंने अपना पूरा शासन **'महेंद्र पाल प्रथम'** को सौंप दिया ।

महेंद्र पाल प्रथम के शासनकाल में गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य का **'सर्वाधिक विस्तार' (Largest Expansion)** हुआ ।

इनका राज्य हिमालय से लेकर विंध्याचल तक और पूर्वी समुद्र तट से पश्चिमी समुद्र तट तक फैल गया था ।

इन्होंने **बंगाल** के पाल शासक **'नारायण पाल'** को बुरी तरह पराजित किया था ।

Jeet Rana GS

महाकवि राजशेखर और उनकी प्रसिद्ध रचनाएं

Jeet Rana GS

महेंद्र पाल प्रथम ने विद्वानों को बहुत संरक्षण दिया; उनके दरबार में सबसे महान कवि 'राजशेखर' निवास करते थे।

राजशेखर ने अनेक महान ग्रंथों की रचना की:

- कर्पूर मंजरी (यह एक नाटक है जो 'प्राकृत भाषा' में लिखा गया है)।
- बाल रामायण।
- बाल भारत।
- काव्य मीमांसा।
- हरविलास।
- विद्धशालभंजिका।

Jeet Rana GS

राजशेखर द्वारा महेंद्र पाल प्रथम को दी गई उपाधियां

Jeet Rana GS

दरबारी कवि राजशेखर ने महेंद्र पाल प्रथम को कई शक्तिशाली उपाधियों से सुशोभित किया था। प्रमुख उपाधियां इस प्रकार थीं:

निर्भय नरेश

निर्भय नरेंद्र

रघु ग्रामीणी

रघुकुल चूड़ामणि / रघुवंश चूड़ामणि ।

Jeet Rana GS

महिपाल प्रथम (912 - 944 ईस्वी) का शासन

Jeet Rana GS

महेंद्र पाल प्रथम के बाद
भोज द्वितीय (910-912 ईस्वी)
गद्दी पर बैठा,

↓

जिसे महिपाल प्रथम ने
हराकर सत्ता छीन ली।

राजशेखर ने महिपाल प्रथम को भी
दो प्रमुख उपाधियां दी थीं :

- रघुकुल मुकुट मणि।
- आर्यावर्त का महाराजाधिराज।

Jeet Rana GS

अरब यात्री 'अल मसूदी' का महिपाल प्रथम पर विवरण

महिपाल प्रथम के शासनकाल (लगभग 915-916 ईस्वी) में अरब यात्री **'अल मसूदी'** भारत आया था।

अल मसूदी ने भी अपनी पुस्तक में महिपाल प्रथम को **"अरबों का सबसे बड़ा शत्रु"** बताया।

अल मसूदी के अनुसार महिपाल प्रथम के पास लगभग **7 से 9 लाख** सैनिकों की एक विशाल और शक्तिशाली सेना मौजूद थी।

Jeet Rana GS

महिपाल प्रथम के समय कन्नौज पर आक्रमण और पतन की शुरुआत

Jeet Rana GS

महिपाल प्रथम के शासनकाल के दौरान ही राष्ट्रकूट शासक **'इंद्र तृतीय'** ने कन्नौज पर भीषण आक्रमण कर दिया।

इंद्र तृतीय ने कन्नौज को पूरी तरह नष्ट कर दिया; हालाँकि उसके जाने के बाद महिपाल ने स्थिति संभाली, लेकिन प्रतिहार साम्राज्य के पतन की शुरुआत यहीं से हो गई।

Jeet Rana GS

महमूद गजनवी का आक्रमण और राज्यपाल का पलायन

साम्राज्य के पतन के दौर में (लगभग 1018 ईस्वी में) 'राज्यपाल' नामक शासक का कन्नौज पर राज था।

उसी समय महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण कर दिया।

गजनवी और तुर्कों के खौफ के कारण कायर शासक 'राज्यपाल' युद्ध का मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

Jeet Rana GS

विद्याधर चंदेल का प्रताप और राज्यपाल की हत्या

Jeet Rana GS

बुंदेलखंड (कालिंजर) के चंदेल शासक 'विद्याधर चंदेल' अत्यंत प्रतापी थे। गजनवी अपने 17 आक्रमणों में से एकमात्र विद्याधर चंदेल को कभी नहीं हरा सका।

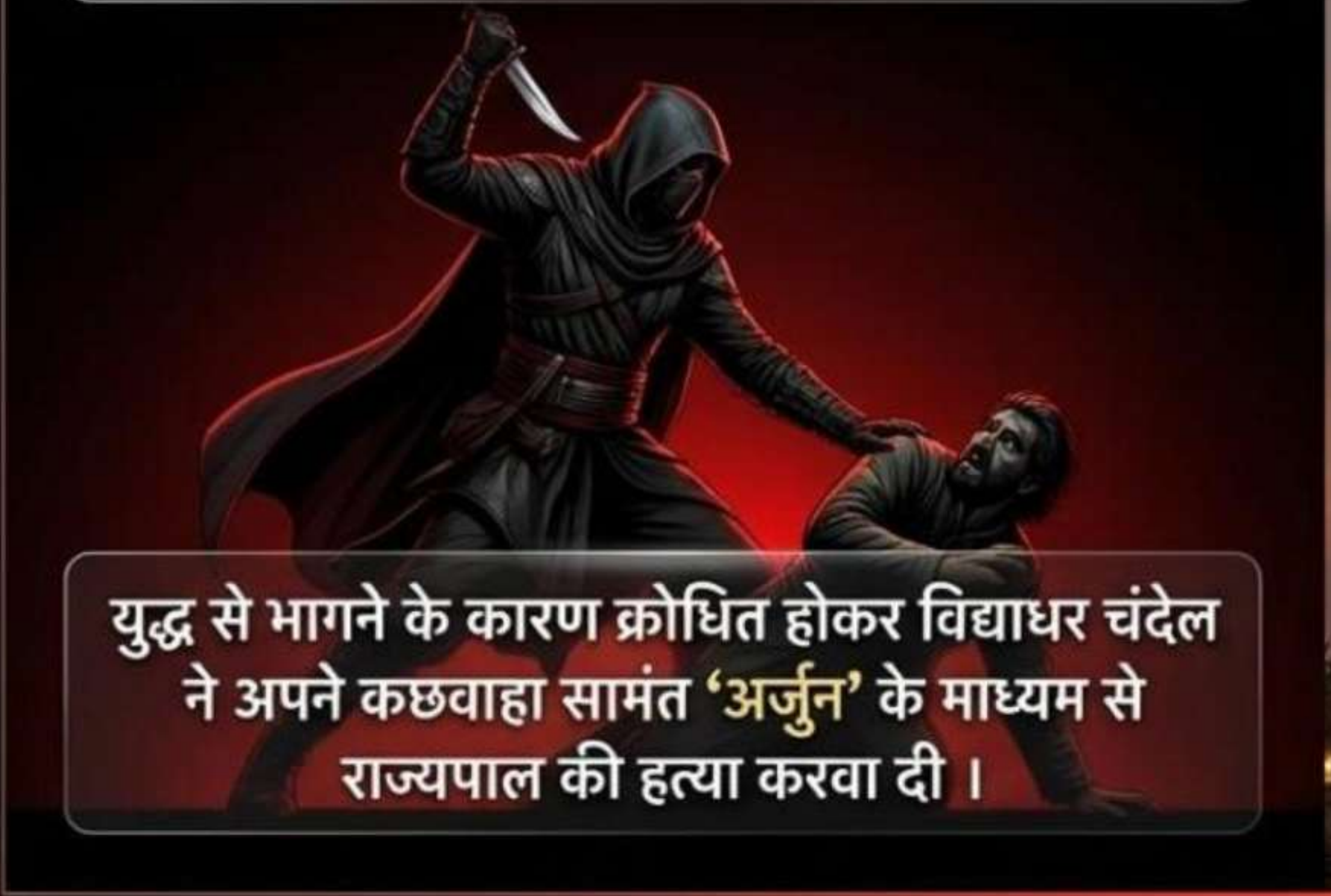

युद्ध से भागने के कारण क्रोधित होकर विद्याधर चंदेल ने अपने कछवाहा सामंत 'अर्जुन' के माध्यम से राज्यपाल की हत्या करवा दी।

विद्याधर चंदेल ने खजुराहो में प्रसिद्ध 'कंदरिया महादेव मंदिर' का निर्माण भी करवाया था।

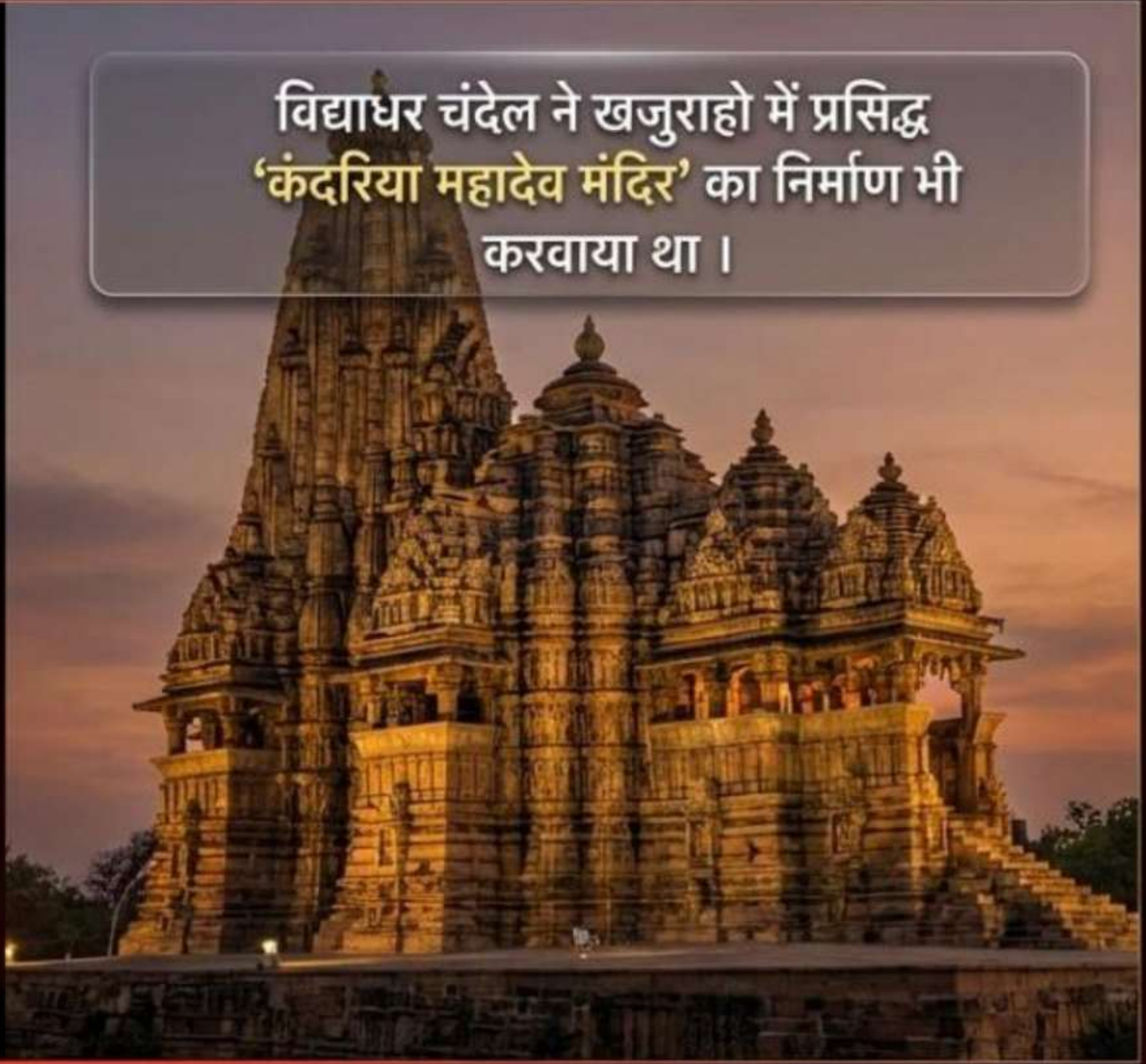

Jeet Rana GS

JR Jeet Rana GS

प्रतिहार वंश का अंतिम शासक और सामंतों की स्वतंत्रता

प्रतिहार वंश के अंतिम शासकों में त्रिलोचन पाल और 'यशपाल' का नाम आता है ।

यशपाल गुर्जर प्रतिहार वंश का बिल्कुल अंतिम शासक (Last Ruler) था ।

इसके बाद केंद्रीय सत्ता समाप्त हो गई और प्रतिहारों के सभी 'सामंत' (Feudatories) मजबूत होकर पूर्णतः स्वतंत्र हो गए ।

Jeet Rana GS

सामंतों से निकले प्रमुख राजपूत राजवंश (राजपूत काल का आरंभ)

प्रतिहारों के सामंतों ने अलग-अलग क्षेत्रों में अपने नए और स्वतंत्र राज्य स्थापित किए :

Jeet Rana GS

राजपूतों का 'शैडो ऑफ गॉड' (Shadow of God) सिद्धांत

Jeet Rana GS

मध्यकाल में सत्ता स्थापित करने वाले राजा स्वयं को भगवान या प्राचीन राजाओं का वंशज सिद्ध करने के लिए **'Shadow of God'** (ईश्वर की छाया) की अवधारणा का उपयोग करते थे।

उदाहरण: जब छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक होना था, तब पंडित गंगा भट्ट ने गणाएं करके सिद्ध किया था कि शिवाजी महाराज वास्तविकता में मेवाड़ राजवंश **(सूर्यवंशी गुहिल शाखा)** से संबंधित हैं।

Jeet Rana GS

इतिहास की समझ और आलोचनाओं पर नवदीप सर के विचार

सर ने समझाया कि 500 साल पुरानी ऐतिहासिक घटनाओं (जैसे जयपुर के राजा भारमल का अपनी पुत्री हरखा बाई का विवाह अकबर से करना) की आलोचना आज के सुख-सुविधा वाले समय में बैठकर नहीं की जानी चाहिए।

भौगोलिक परिस्थितियों और राजाओं की विवशता को समझना आवश्यक है (जैसे मेवाड़ अरावली पहाड़ियों के कारण अकबर का सामना कर पाया, जबकि मैदानी इलाकों वाले ऐसा नहीं कर सकते थे)।

महान नायकों (जैसे महाराणा प्रताप, शिवाजी महाराज) का इतिहास तभी सार्थक है जब उनके सामने खड़ी बड़ी चुनौतियों (अकबर, औरंगजेब) के बारे में भी पढ़ा जाए।

Jeet Rana GS

प्रमुख ऐतिहासिक ग्रंथ और उनके लेखक (Static GK)

राजतरंगिणी (राजाओं की नदी) –	कल्हण।
गीत गोविंद –	जयदेव।
कथा सरित्सागर –	सोमदेव (सेन राजा लक्ष्मण सेन के दरबार में)।
पृथ्वीराज रासो –	चंद बरदाई।
सिद्धांत शिरोमणि –	भास्कराचार्य।

Jeet Rana GS

Jeet Rana GS

पल्लव राजवंश - एक परिचय

- पल्लव राजवंश की स्थापना लगभग तीसरी शताब्दी में हो गई थी, लेकिन इन्होंने 10वीं शताब्दी तक शासन किया।
- **5वीं, छठी और 7वीं शताब्दी के दौरान पल्लव तमिलनाडु की सबसे मजबूत शक्ति के रूप में उभरे।**
- इनकी राजधानी कांचीपुरम हुआ करती थी, जहाँ से ये मुख्य रूप से शासन करते थे।
- **पल्लवों के इतिहास और जानकारी का एक प्रामाणिक स्रोत तमिलनाडु स्टेट बोर्ड की इतिहास की किताबें हैं।**
- 5वीं शताब्दी के एक शिलालेख के अनुसार, पल्लवों को क्षत्रिय माना गया है।

Jeet Rana GS

पल्लवों की उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धांत

Jeet Rana GS

विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत: इतिहासकार डुबल का मानना था कि पल्लव बाहर से आए **'पार्थियंस'** (पहलव) थे, लेकिन भारतीय इतिहासकार इस बात को नहीं मानते।

स्वदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत: केपी जयसवाल, डीसी सरकार और नीलकंठ शास्त्री जैसे प्रसिद्ध इतिहास्त्राकारों का मानना है कि पल्लव मूल रूप से भारतीय ही थे।

केपी जयसवाल का यह भी मानना था कि पल्लव **वाकाटक वंश की शाखा** थे, लेकिन इसे पूरी तरह स्वीकार नहीं किया गया है।

सामान्यतः यह माना जाता है कि पल्लव मूल रूप से **आंध्र प्रदेश क्षेत्र** से आए थे और शुरुआत में **सातवाहनों के सामंत** हुआ करते थे।

Jeet Rana GS

पल्लव वास्तुकला और मंदिर निर्माण (द्रविड़ शैली)

Jeet Rana GS

दक्षिण भारत में 'द्रविड़ शैली' में मंदिर बनाने की शुरुआत का श्रेय पल्लव राजवंश को जाता है।
द्रविड़ शैली की प्रमुख विशेषता पिरामिड के आकार का स्ट्रक्चर बनाना था, जिसे 'विमान' कहा जाता है।
पल्लवों ने कांचीपुरम और मम्ल्लापुरम (महाबलीपुरम) में अद्भुत और भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया।
पल्लव काल के दौरान वास्तुकला फली-फूली और इसी समय 'भरनाट्यम' जैसी कला भी विकसित हुई।
इन्होंने अपने शिलालेखों में संस्कृत के साथ-साथ मुख्य रूप से तमिल भाषा का उपयोग किया (पल्लव ग्रंथ लिपि से तमिल विकसित हुई)।

Jeet Rana GS

प्रारंभिक पल्लव शासक (सिंह वर्मा और शिव स्कंद वर्मन)

- पल्लव वंश का पहला मुख्य शासक **सिंह वर्मा** (लगभग 250 - 275 ई.) था।
- इसके बाद **शिव स्कंद वर्मन** शासक बना जिसने **'धर्म महाराज'** की उपाधि धारण की।
- शिव स्कंद वर्मन ने **कृष्णा नदी** से लेकर **पेन्नार नदी** के बेसिन तक शासन किया।
- उसने अपने राज्य विस्तार के लिए **अश्वमेध** और **वाजपेय** जैसे बड़े **यज्ञ** करवाए (जिनका उल्लेख यजुर्वेद में मिलता है)।
- पल्लवों के सबसे पहले **ताम्रपत्र अनुदान (Copper plate grants)** इसी स्कंद वर्मन के समय जारी किए गए थे।

Jeet Rana GS

विष्णु गोप और समुद्रगुप्त का आक्रमण

विष्णु गोप पल्लव वंश का शासक था जिसने 350 से 375 ईसवी के बीच शासन किया।

यह गुप्त वंश के महान शासक समुद्रगुप्त (जिसे नेपोलियन ऑफ इंडिया कहा जाता है) का समकालीन था।

समुद्रगुप्त ने अपने दक्षिण अभियान के दौरान विष्णु गोप पर आक्रमण करके उसे हराया था।

विष्णु गोप को हराने की इस घटना का उल्लेख हरिषेण द्वारा रचित 'प्रयाग प्रशस्ति' में मिलता है।

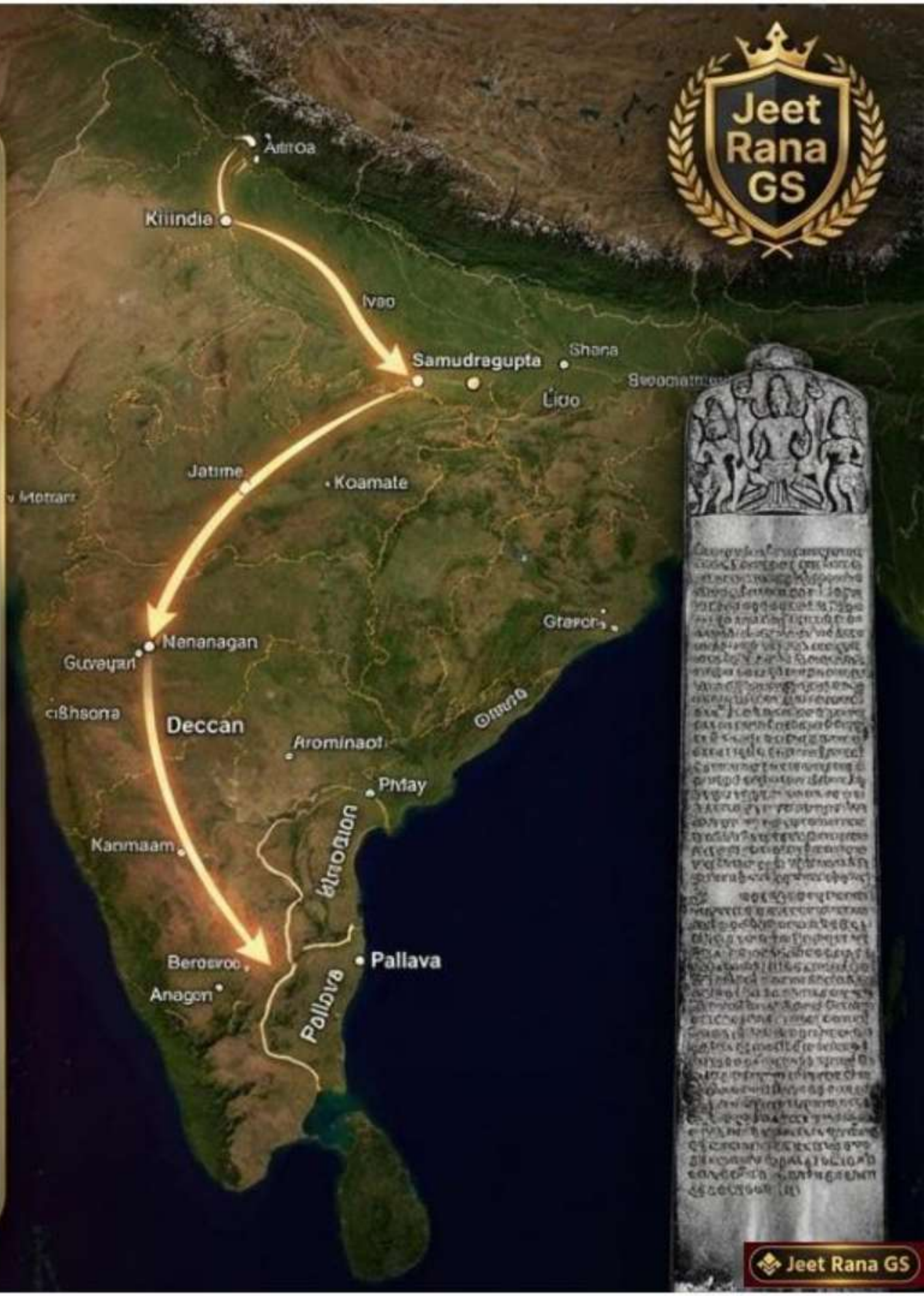

महान पल्लवों का उदय - सिंह विष्णु (575-600 ई.)

- विष्णु गोप के बाद आठ और शासक हुए और फिर सिंह विष्णु का काल आया (575-600 ई.), जिसे पल्लव वंश का संस्थापक (महान परंपरा की शुरुआत करने वाला) भी कहा जाता है।
- सिंह विष्णु ने चोल, मलय, कलब, मालव, पांड्य और सिंहल शासकों को हराया और अपने राज्य की सीमा कावेरी नदी तक बढ़ाई।
- उसने 'अवनी सिंह' की उपाधि धारण की थी।
- सिंह विष्णु ने 'किरातार्जुनीयम्' के रचयिता महान कवि भारवि को अपने दरबार में संरक्षण दिया था।
- उसने मम्ल्लापुरम (महाबलीपुरम) में चट्टानों को काटकर 'आदि वराह गुहा मंदिर' का निर्माण करवाया।

Jeet Rana GS

महेंद्र वर्मन प्रथम (600-630 ई.)

महेंद्र वर्मन प्रथम सिंह विष्णु का पुत्र था, जिसने रॉक कट वास्तुकला की शुरुआत की थी।

मंडगापट्टू शिलालेख के अनुसार, उसने लकड़ी, ईंट या धातु के उपयोग के बिना ही मंदिरों का निर्माण करवाया था।

वह एक महान निर्माता, कवि और संगीतज्ञ था जिसने 'मत्तविलास प्रहसन' और 'भगवदज्जुकियम्' जैसे ग्रंथों की रचना की।

उसने 'विचित्र चित्त' की उपाधि धारण की थी।

612/618 ईसवी के 'पुल्लूर के युद्ध' में चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने महेंद्र वर्मन प्रथम को हरा दिया था, जहाँ से पल्लव-चालुक्य संघर्ष की शुरुआत हुई।

Jeet Rana GS

नरसिंह वर्मन प्रथम (630-668 ई.) - पल्लवों का प्रतापी सम्राट

नरसिंह वर्मन प्रथम ने अपने पिता की हार का बदला लिया और 642 ईसवी में **'वातापी के युद्ध'** में चालुक्य शासक **पुलकेशिन द्वितीय** को युद्ध के मैदान में मार गिराया।

पुलकेशिन को हराने के बाद उसने **'वातापी कोंड'** (वातापी का विजेता) और **'महामल्ल'** की उपाधियाँ धारण की।

इस विजय का उल्लेख **मल्लिकार्जुन देव मंदिर** की **शिला (पत्थर)** पर मिलता है।

उसने **कांची** के पास एक महान बंदरगाह शहर **'मामल्लपुरम' (महाबलीपुरम)** की स्थापना की।

इसी के शासनकाल में चीनी यात्री **ह्वेनसांग (जुआन ज़ेंग)** ने पल्लव दरबार का दौरा किया था और राजा की महानता का वर्णन किया।

Jeet Rana GS

महाबलीपुरम के रथ मंदिर और वराह गुफा

नरसिंह वर्मन प्रथम (मामल्ल) के काल में महाबलीपुरम में समुद्र तट पर चट्टानों को काटकर अद्भुत मंदिरों का निर्माण किया गया।

यहाँ महाभारत काल के पात्रों पर आधारित रथ मंदिर बनाए गए: द्रौपदी रथ, अर्जुन रथ, भीम रथ, धर्मराज रथ और नकुल-सहदेव रथ।

महेंद्र वर्मन द्वारा शुरू किए गए 'वराह गुफा मंदिर' (भगवान विष्णु को समर्पित) को नरसिंह वर्मन प्रथम ने और बेहतर तरीके से विकसित किया।

Jeet Rana GS

परमेश्वर वर्मन प्रथम (670-700 ई.)

महेंद्र वर्मन द्वितीय (जिसने केवल 2 साल शासन किया) के बाद परमेश्वर वर्मन प्रथम गद्दी पर बैठा। उसने

पल्लव-चालुक्य संघर्ष के अंतिम चरण में पेरवलनूर के युद्ध में चालुक्य शासक विक्रमादित्य को पराजित किया।

चालुक्यों को हराने के बाद उसे 'गंग शासक भू-विक्रम' की उपाधि से भी सम्मानित किया गया था। उसने रणंजय, लोकादित्य, एकमल्ल और उग्रदंड जैसी कई उपाधियाँ धारण कीं।

रणंजय	लोकादित्य	एकमल्ल	उग्रदंड

Jeet Rana GS

नरसिंह वर्मन द्वितीय / राजसिंह (700-728 ई.)

नरसिंह वर्मन द्वितीय का काल युद्धों की जगह शांति और बड़े पैमाने पर मंदिर निर्माण (विकास कार्यों) के लिए जाना जाता है।

इसने कई उपाधियाँ लीं: राजसिंह, राजमल्ल, राज सिद्धेश्वर, शंकर भक्त, आगम प्रिय, धनंजय, राज विद्याधर और चतुर्मुख।

इसके शासनकाल में महाबलीपुरम के तट पर भगवान विष्णु और शिव को समर्पित **'शोर मंदिर'** का निर्माण हुआ।

इसके अलावा मलापुरम में **ईश्वर और मुकुंद मंदिर**, पनामलाई में **ताल गिरीश्वर मंदिर** और कांची में प्रसिद्ध **'कैलाशनाथर मंदिर'** का निर्माण इसी ने करवाया।

प्रसिद्ध **'दक्षिणामूर्ति मूर्तिकला'** (जिसमें भगवान शिव को एक शिक्षक के रूप में दिखाया गया है) कैलाशनाथर मंदिर से ही जुड़ी है।

Jeet Rana GS

नंदी वर्मन द्वितीय (730-800 ई.)

नरसिंह वर्मन द्वितीय के बाद नंदी वर्मन द्वितीय को कांची के लोगों द्वारा सिंह विष्णु की समानांतर शाखा से शासक चुना गया।

इसने लगभग 70 वर्षों तक पल्लव साम्राज्य पर शासन किया।

इसे 'पल्लव मल्ल' कहा जाता था और इसने भी 'राजसिंह' की उपाधि धारण की थी।

नंदी वर्मन द्वितीय ने कांचीपुरम के हृदय में स्थित सैंड स्टोन (पत्थर) से बने 'वैकुंठ पेरुमल मंदिर' का निर्माण करवाया।

यह शासक पहले जैन धर्म को मानता था, लेकिन बाद में शैव धर्म (भगवान शिव का भक्त) में परिवर्तित हो गया।

Jeet Rana GS

पल्लव राजवंश का पतन और अंतिम शासक

पल्लव राजवंश ने लगभग 250 ईसवी से लेकर 900-980 ईसवी तक (लगभग 730+ साल) एक बहुत लंबा शासन किया।

इस राजवंश का अंतिम ज्ञात मुख्य शासक **कंप वर्मा (प्रथम)** था, जिसने 948 से 980 ईसवी तक शासन किया।

कंप वर्मा के बाद 9वीं और 10वीं शताब्दी में शक्तिशाली चोल शासकों **(आदित्य चोल, परांतक चोल, राजराज चोल, राजें चान्द्र चोल)** ने पल्लवों को हरा दिया और इनकी शक्ति समाप्त कर दी।

Jeet Rana GS